गुरुमाई चिद्विलासानन्द द्वारा लिखित पुस्तक

अन्तर-शुद्धि के सोपान

उद्धरण २४

सत्त्व-संशुद्धि का विकास होता है, शुद्ध कर्मों से। कोई फ़िल्म "निर्दोष" नहीं होती। "सादे" भोजन जैसा कुछ नहीं होता। हर बात, यहाँ तक कि समाचार भी, बड़े गहरे स्तर पर तुम्हें प्रभावित करते हैं। क्या अक्सर तुमने यह नहीं देखा है कि कोई समाचार सुनने के घण्टों बाद भी, समाचार के अनुसार, तुम उससे दुःखी या उत्साहित रहते हो। समाचार तो समाचार है। अच्छा हो या बुरा, वह तुम पर प्रभाव डालता है। तुम अपने कानों में जो भी भरो, वह तुम्हारे अन्दर ही रहता है।

बहुत कम लोग ऐसे हैं जो इन सब बातों को तुरन्त ही मन से निकाल पाते हैं। बाहर के प्रभावों को ग्रहण करने या आत्मसात् करने के लिए यह बहुत आवश्यक है कि तुम अत्यन्त अनुशासित हो और जल्द से जल्द उन्हें अपने अन्दर से निकाल सको ताकि इनमें से कुछ भी तुम्हारे अन्दर न रह जाए। यदि तुम कीचड़ से भरे तालाब में नहाने का प्रयत्न करते हो तो साफ़ होने की अपेक्षा गन्दे होने की सम्भावना ही अधिक है। तुम दलदल में डूब भी सकते हो। इसी प्रकार, यदि तुम लापरवाही से भरे अशुद्ध कर्म करोगे तो देर-सबेर तुम उनके परिणामों को झेलते-झेलते उनके नीचे दब जाओगे।

शैवदर्शन के एक प्रधान ग्रन्थ 'स्पन्दकारिका' में कहा गया है :

> *निजाशुद्ध्यांसमर्थस्य कर्तव्येष्वभिलाषिणः।*
> *यदा क्षोभः प्रलीयेत तदा स्यात्परमं पदम्॥*
>
> एक व्यक्ति अपनी अशुद्धि के कारण असमर्थ हो जाता है और कर्मों में आसक्त
> हो जाता है। [१:९]

© २०२२ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।

गुरुमाई चिद्विलासानन्द, *अन्तर-शुद्धि के सोपान : दिव्य सद्गुणों का योग* अध्याय २ "अस्तित्व की शुद्धि," से उद्धृत [चित्शक्ति पब्लिकेशन्स, २०१३], पृ. २२-२३।